

नं० ५४८८ — घ

दशावतार स्तोत्रम्

पत्राणि ४

संपूर्णम्

दशावतार

नं. १००८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं. ५८

नं. १००८
क

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ नवमी श्रीना
रायणजीबुद्धिरूपहोउत्तरे॥ बुधि
कीमाताकूर्मावती॥ पितागगनारि
षी॥ गुरुश्रगल्लसनी॥ छेत्रापुरीपर
पठनेदलंत॥ अज्ञासरदातवली

पुष्पावली

४ वन

सोन

द
१

योउपरंत ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ दसमी श्रीनाम
 राय एजीति हकलंकक रूप होउत रे॥
 साव सहेनि सुक्लापद तिथौ पका
 दसी॥ संवत् ॥ १५०॥ ५६॥ राजा बीरवि
 कसाजीत विस्मदास ब्राह्मण केव
 र॥ सतचड़ी आसन पलान॥ सखिदि

द
१५

लीपुच्छलडकुणसान॥पंजीहथ।
मर्द॥प्रणराहथ।वडगनौवहथ॥
ब्रदाराकुरी॥प्रोसमानमीहवरसेगा
वीसवरसकीमनुषकीआयुर्वला
होवेगा॥पंजवरसकीकंन्यापरस
ताहोवेगी॥प्रजासमानगाऊहोइ।

गीच्छत्रच्छाया मे च डे वरो राजा राज
परजासुख॥ निहकलंककीमाता
सहतेगीपिताय नुषरिषी॥ गुरुस
हजानेद॥ केत्रीसफलपुरी॥ पुरष
वनेदलंत॥ कलंचदानोलीयोऽ
धरंत॥ दसश्रोतारसनेचित्तलाइ

द
१३

बधे धर्म पाप ब्रै जाइ ॥ जिस चार वेद
पड कै धर्म जिस को टिका दसी रषे
का धर्म जिस को टिती रथ श्री गंगा
जी अ स नान की ई का धर्म ॥ उस दा
पवित्र पडे पडाइ ॥ पडने का धर्म जो
कोई दस औ तार पडेगा ॥ पवित्र हो

केथमंकरकिजोहृदैमैधरे॥प्रको
त्रसौपितरस्वर्गलोकतरजायगेप्र
रुगंगाजीकेप्रसनातकीइकाजोफ
लहै॥प्ररुकोटीतीर्थीकाजोफलहै
प्ररुसौवगवोंकाफलजोहै॥प्ररुको
टीगयाकाजोफलहै॥प्ररुसौवके।

२२३

द
१५

नादानकीजोफलहै॥ सोदसश्रौ
तारपडनेकाप्रथवासननेकाफ
लहै॥ दसश्रौतारशंकराचारजीउचरे
इतिश्रीदसश्रौतारलोत्रेसमाप्तम् शुभम्

॥

॥ ५५
१००८